गुरु नानक - सबद ७६
सभे कंत महेलीआ सगलीआ करहि सीगारु ॥
रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५३

सभे कंत महेलीआ सगलीआ करहि सीगारु ॥
गणत गणावणि आईआ सूहा वेसु विकारु ॥
पाखंडि प्रेमु न पाईऐ खोटा पाजु खुआरु ॥१॥
हरि जीउ इउ पिरु रावै नारि ॥
तुधु भावनि सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि ॥१॥ रहाउ ॥
गुर सबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि ॥
दुइ कर जोड़ि खड़ी तकै सचु कहै अरदासि ॥
लालि रती सच भै वसी भाइ रती रंगि रासि ॥२॥
पृअ की चेरी कांढीऐ लाली मानै नाउ ॥
साची प्रीति न तुटई साचे मेलि मिलाउ ॥
सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥३॥
सा धन रंड न बैसई जे सतिगुर माहि समाइ ॥
पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाइ ॥
नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाइ ॥४॥
साचु धड़ी धन माडीऐ कापड़ु प्रेम सीगारु ॥
चंदनु चीति वसाइआ मंदरु दसवा दुआरु ॥
दीपकु सबदि विगासिआ राम नामु उर हारु ॥५॥
नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥
सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥
बिनु पिर पुरखु न जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥६॥
निसि अंधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाइ ॥
अंकु जलउ तनु जालीअउ मनु धनु जलि बलि जाइ ॥
जा धन कंति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाइ ॥७॥
सेजै कंत महेलड़ी सूती बूझ न पाइ ॥

हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाइ ॥
सतिगुरि मेली भै वसी नानक प्रेमु सखाइ ॥८॥२॥

सार: सर्वव्यापी स्रोत स्त्री और पुरुष, दोनों ऊर्जाओं को एक करता है। यह सृष्टि को संचालित करने वाली आवश्यक शक्तियाँ हैं जो साथ मिलकर अस्तित्व की लय बनाती हैं एवं एक दूसरे को संतुलित करती हैं और द्वैत को समाप्त कर सामंजस्य को बढ़ावा देती हैं । यह संतुलन लिंग से परे, हमारे वास्तविक स्वरूप को प्रतिबिंबित करता है जहाँ शक्ति सेवा बन जाती है, बुद्धि ज्ञान में रूपांतरित होती है और प्रेम कर्म में परिवर्तित होता है। दोनों ऊर्जाओं को अपनाने से हम ब्रह्मांडीय व्यवस्था को आत्मसात करते हैं जहाँ सूर्य और चंद्रमा एक साथ विद्यमान हैं। सच्ची चेतना किसी एक को चुनने में नहीं बल्कि दोनों को एक संतुलित रूप से हमारा मार्गदर्शन करने देने से, सार्थक जीवन की ओर लाती है।

सभे कंत महेलीआ सगलीआ करहि सीगारु ॥
सभी स्वयं को समर्पित जीवन साथी समझते हैं और सजधज कर तैयार होते हैं। यह एक गलत धारणा को उजागर करता है कि वास्तविक संबंध के लिए बाहरी प्रदर्शन और अनुष्ठान पर्याप्त हैं।

गणत गणावणि आईआ सूहा वेसु विकारु ॥
वह चुने हुए लोगों में गिने जाने की चाह रखते हैं फिर भी उनके लाल वस्त्र भ्रष्टाचार से दागदार हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि भक्ति के बाहरी प्रतीक भीतर की अशुद्धियों को शुद्ध नहीं कर सकते।

पाखंडि प्रेमु न पाईऐ खोटा पाजु खुआरु ॥१॥
पाखंड से प्रेम को पोषित नहीं किया जा सकता। झूठे प्रदर्शन शर्मनाक हैं, यह खुलासा करता है कि वास्तविक आंतरिक कार्य के बिना भक्त होने का दिखावा अंततः विश्वास और सम्मान की हानि का कारण बनता है। (१)

हरि जीउ इउ पिरु रावै नारि ॥
सर्वव्यापी शक्ति हर जीव में वास करती है। यह बोध आत्मा को अपने प्रिय से मिलन करने में सहायता करता है। यह इस सत्य का प्रतीक है कि जिसे हम बाहर खोज रहे हैं वह हमारे भीतर ही है और अपने सच्चे सार के साथ एक होने को आतुर है।

तुधु भावनि सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि ॥१॥ रहाउ ॥
यदि यह विचार आपके साथ प्रतिध्वनित होता है तब वास्तव में आप सौभाग्यशाली हैं जो आत्म-चिंतन को अपना रहे हैं। यह स्वयं के विकास को बढ़ावा देता है। (१)(विराम)

गुर सबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि ॥
ज्ञान के शब्दों से अलंकृत, तन और मन एकरूप हो जाते हैं और आत्मा अपने प्रियतम से निकट हो जाती है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे जागरूकता हमारे सच्चे स्वरूप, सार्वभौमिक और सर्वव्यापी ऊर्जा के साथ मिलन को आसान बनाती है।

दुइ कर जोड़ि खड़ी तकै सचु कहै अरदासि ॥
एक व्यक्ति हाथ जोड़कर, लालसा में सत्य की खोज के लिए खड़े होकर प्रार्थना करता है। यह जीवन के उद्देश्य की खोज में एक साधक की विनम्रता और ईमानदारी का प्रतिनिधित्व करता है।

लालि रती सच भै वसी भाइ रती रंगि रासि ॥२॥
प्रियतम के प्रति प्रेम से ओतप्रोत कुछ लोग सत्य के भय में रहते हैं, हालाँकि भक्ति में डूब जाने से आनंद और विकास का अनुभव होता है। यह दर्शाता है कि संदेह विकास की क्षमता में बाधा डाल सकता है। (२)

पृअ की चेरी काँढीऐ लाली मानै नाउ ॥
वह प्रियतम के भक्त कहलाते हैं जो चिंतन को भक्ति के रूप में स्वीकार करते हैं।

साची प्रीति न तुटई साचे मेलि मिलाउ ॥

सच्चा प्रेम कभी टूटता नहीं क्योंकि यह प्रामाणिकता के माध्यम से शाश्वत जागरूकता से जुडा होता है।

सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥३॥
ज्ञान के शब्दों में डूबकर मन बोध के लिए खुल जाता है। इस जागृति के लिए व्यक्ति स्वयं को सदा के लिए कृतज्ञता में समर्पित कर देता है। (३)

सा धन रंड न बैसई जे सतिगुर माहि समाइ ॥
जो लोग सद्गुणों को धारण करते हैं वह कभी दुर्भाग्यशाली नहीं हो सकते यदि वह उस गहन ज्ञान में विलीन हो जाएँ जो उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाइ ॥
प्रिय सदा आनंदित, नवीन और शाश्वत है जो कभी लुप्त नहीं होता, अमर है। प्रियतम सदा विद्यमान चेतना के भीतर शाश्वत जागरूकता का प्रतिनिधित्व करता है जो हमारा निरंतर साथी है।

नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाइ ॥४॥
जब कोई वास्तव में प्रकृति की इच्छा के अनुरूप होता है, वह भाग्यशाली रहता है। (४)

साचु धड़ी धन माडीऐ कापड़ु प्रेम सीगारु ॥
जब अपने आप को सत्य की वेणी से सजाया जाता है, सद्गुणों और प्रेम के वस्त्रों से सुसज्जित किया जाता है, यह दृश्य दर्शाता है कि सद्गुणों और प्रेम के साथ गुंथी हुई ईमानदारी जीवन को वास्तव में आकर्षक बनाती है।

चंदनु चीति वसाइआ मंदरु दसवा दुआरु ॥
जब गुण चंदन की तरह अंतःकरण में निवास करते हैं तब वह मंदिर के दसवें द्वार तक पहुँचा देते हैं। अर्थात्, जिस प्रकार चंदन शांति प्रदान करता है उसी प्रकार एक स्पष्ट विवेक जागरूकता के एक पवित्र क्षेत्र को विकसित कर सकता है।

दीपकु सबदि विगासिआ राम नामु उर हारु ॥५॥
ज्ञान के शब्द उस दीपक के समान हैं जो प्रकाश देता है और सर्वव्यापी जागरूकता का चिंतन अंतःकरण को उसी प्रकार उन्नत करता है जैसे शरीर को माला से सुशोभित किया जाता है। (५)

नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥
संपूर्ण सृष्टि में विद्यमान स्त्री ऊर्जा शांति का प्रतीक है। यह गुण करुणा की चेतना को धारण करने वाला मार्गदर्शक रत्न बन जाता है।

सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥
सर्वव्यापी ऊर्जा की वास्तविकता के प्रति असीम प्रेम होने पर सम्मान और जागरूकता आनंददायक हो जाती है।

बिनु पिर पुरखु न जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥६॥
पुरुषोचित ऊर्जा की कोमलता के बिना, व्यक्ति शाश्वत सर्वव्यापी स्रोत को नहीं समझ सकता जो स्त्री और पुरुष दोनों ऊर्जाओं का मिश्रण है। सच्चे ज्ञान के प्रेम से ही यह बोध जागृत होता है। (६)

निसि अंधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाइ ॥
रात के अंधेरे में व्यक्ति सोया रहता है। प्रियतम के बिना रात कैसे बीते? यह चिंतन इस बात पर प्रकाश डालता है कि ध्यान के अभाव वाले क्षण व्यर्थ और अधूरे लगते हैं।

अंकु जलउ तनु जालीअउ मनु धनु जलि बलि जाइ ॥
मन और शरीर जल रहे हैं, चेतना व्यथित है और धन अपना अर्थ खो देता है। यह दर्शाता है कि आध्यात्मिक तृप्ति के बिना जीवन खोखला लगता है क्योंकि भौतिकता असंतोष की ओर ले जाती है।

जा धन कंति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाइ ॥७॥

जब दूल्हा-दुल्हन अपने मिलन को स्वीकार नहीं करते तब उनका यौवन व्यर्थ हो जाता है। यह बताता है कि जो लोग अपनी स्त्री-पुरुष ऊर्जा को संजोकर उनमें सामंजस्य नहीं साधते वह जीवन के सार से वंचित रह जाते हैं। (७)

सेजै कंत महेलड़ी सूती बूझ न पाइ ॥

प्रियतम सेज पर उपस्थित है लेकिन साथ में सो रहा साथी उसकी उपस्थिति से अवगत नहीं है। यह विरोधाभास की स्थिति दर्शाती है कि सर्वव्यापी की उपस्थिति में भी अज्ञानता में खोया साधक अपने शाश्वत साथी को देखने में विफल रहता है।

हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाइ ॥

मैं सोया हूँ पर मेरा प्रियतम जागृत है, मैं मार्गदर्शन के लिए किससे पूछूं? यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि सदैव जागरूक, सर्वव्यापी शक्ति हमारे भीतर निवास करती है लेकिन फिर भी अज्ञानता में विवेक उसे पाने की लालसा रखता है।

सतिगुरि मेली भै वसी नानक प्रेमु सखाइ ॥८॥२॥

जब सच्चे ज्ञान को अपनाया जाता है वह हमें अज्ञानता से जागरूकता की ओर ले जाता है तब यह आध्यात्मिक पतन का भय रखता है। नानक कहते हैं तब प्रेम प्रिय सखा बन जाता है। (८)(२)

तत्त्व: गुरु नानक हमें स्मरण कराते हैं कि जब जागरूकता और प्रेम हमारे भीतर मिलते हैं तब अलगाव समाप्त हो जाता है और आत्मा और स्रोत एक हो जाते हैं। सार्वभौमिक, सर्वज्ञ शक्ति हमारे भीतर निवास करती है फिर भी अज्ञानता में, मन उसे कहीं और खोजता रहता है। यह लालसा हमारे अपने आंतरिक प्रकाश की चमक को नज़रअंदाज़ करने की हमारी प्रवृत्ति को दर्शाती है। जब वास्तविकता जागृत होती है तब यह हमें भ्रम से स्पष्टता की ओर धीरे-धीरे ले जाती है जिससे हम शांति और स्थिरता का अनुभव करते हैं। यह सार्वभौमिक प्रेम को हमारी स्वाभाविक सहज अवस्था बना देती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com